International Journal of Information Movement Vol.I Issue VIII (December 2016)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 79-85

नासिरा शर्मा के उपन्यासों की भाषा शैली

सुमन रानी
शोधार्थी, पीएच.डी. (हिन्दी),
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

सार :

नासिरा शर्मा हिन्दी कथा साहित्य की माननीय एवं उभरती हुई लेखिकाओं में से एक हैं। वे कहानी और उपन्यास के अतिरिक्त रिपोर्ताज, अनुवाद, लेख और कुछ फुटकल कविताएँ भी लिखती हैं किन्तु कथा–साहित्य के क्षेत्र में उनकी विशेष रुचि होने के कारण इस क्षेत्र में उनको विशेष योगदान रहा है। अतः नासिरा शर्मा के सम्पूर्ण कथा साहित्य में समाज के यथार्थ परिवेश की सत्यता की तस्वीर शर्मा के सम्पूर्ण कथा साहित्य में समाज के यथार्थ परिवेश की सत्यता की तस्वीर स्पष्ट झलकती है। इसमें आम जनता के जीवन–यापन की विसंगतियों को उजागर किया गया है क्योंकि जब तक इनको संत्रासभरी जिन्दगी से छुटकारा नहीं मिलेगा तब तक वह पीड़ा झेलने की मानसिकता में ही जीवन व्यतीत करेंगे। नासिरा शर्मा की भाषा उनके भावों और उद्देश्यों की वाहिका है। उन्होंने अपने उपन्यासों में पात्रों का स्तर एवं उनकी परिस्थिति के अनरूप ही भाषा का अवलम्बन किया है। अतः उनकी शिक्षा फारसी में होने के कारण अरबी और फारसी शब्दों की भरमार दिखाई देती है, लेकिन पाठकों को कहीं भी इसकी कठिनाई महसूस नहीं होती है, क्योंकि उनका आरम्भिक जीवन इलाहाबाद में गुजरा है। अतः इलाहाबादी सभ्यता की मिठास और बोलचाल की साधारण गली मौहल्ले की भाषा से लेकर शिक्षित वर्गों की विविध स्तरीय भाषा के साथ कहीं ब्रज का पुट देने में नासिरा शर्मा अद्भुत क्षमता रखती है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में भाषा के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं, जिससे इनके उपन्यासों की भाषा बड़ी ही सुदृढ़, सरल और प्रभावशाली दिखलाई देती है। इससे पाठक नासिरा शर्मा के उपन्यासों से पढ़ता हुआ एकाकार सम्बन्ध स्थापित कर लेता है।

विशेष शब्द : अवलम्बन, सघन, लोकगंध, अल्पाज, खफा, अलकय, गायस

1.0 नासिरा शर्मा के उपन्यासों की भाषा शैली :

नासिरा शर्मा के उपन्यासों की भाषा आम जनता की भाषा है। उपन्यास जिस समग्र रूप में समाज का चित्रण करता है, उसके लिए भाषा के सघन प्रयोग की उसी सीमा तक आवश्यकता होती है। यह कहा जा सकता है कि औपन्यासिक प्रगति का एक आधार उस भाषा की समृद्धि भी है जो उसमें प्रयुक्त होती है। साहित्य और भाषा घनिष्ठ रूप में पारस्परिक सम्बन्ध रखते हैं। इस सम्बन्ध में शान्तिस्वरूप गुप्त के विचार देखिए–"भाषा उपन्यासकार के हाथों में एक शक्तिशाली उपकरण है। वह शब्द योजना, वाक्य संरचना, वाक्य विन्यास और ध्वनि पैटर्न के प्रयोग द्वारा अपनी बात को विशेष प्रभावशाली ढंग से सम्प्रेषित करने में समर्थ होता है। पाठक पर विशेष प्रभाव डाल सकता है।"[1] इसलिए उपन्यास की भाषा सहज, सरल एवं स्वाभाविक होती है तो उपन्यास भावात्मक एवं प्रभावशील बनता है। वस्तुतः भाषा का प्रयोग तत्कालीन समाज के दृष्टिकोण से होता है तो अधिक श्रेयस्कर होता है परन्तु उसमें सरलता का होना अनिवार्य है जिससे आम जनता परिचित हो जाए। जब उपन्यासों में ऐसी भाषा सरल और स्वाभाविक होगी तभी परस्पर समन्वय होगा अन्यथा

अलगाव सा बना रहेगा जिससे पाठक अथवा श्रोता उससे एकाकार नहीं कर पायेगा जिसके परिणामस्वरूप कृति उच्च कोटि की नहीं मानी जाएगी।

1.1 लोकभाषा :

'जिंदा मुहावरे' उपन्यास की कथा उत्तरप्रदेश के फैजाबाद गांव में घटती है। अतः उपन्यास में वहाँ की लोकभाषा के दर्शन होते हैं। लेखिका ने अवधी भाषा का प्रयोग कर पाठकों के लिए भाषा में लोकगंध की मिठास चखाई है। "बरखत से पहले ससुरे को गधा पच्चीसी सवार होय गई है। इ दिन बाद, घूम ठहल कर मुंह पर कालिख पोत इन मरदुदवा लौट अइहै। नया जोस नई जवानी है। करे देव जी भर कर मनमानी। जाए देख सब लोगन एका। आखिर भोर का भूला सांझ गए तो घर लौटत है।"[2] यहाँ पर गाँव देहाती भाषा का खुलकर प्रयोग किया गया है जिससे जनमानस परिचित हो रहा है।

1.2 ईरानी भाषा :

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में ईरानी शब्दों का प्रयोग अधिक मात्रा में दिखाई देता है। इनकी क्लिष्टता से बचने के लिए उन्होंने उपन्यासों में पृष्ठों के नीचे पाद टिप्पणी के रूप में शब्दों के अर्थ दिए हैं। इसलिए कहीं–कहीं ईरानी भाषा के वाक्यांश भी आए हैं। 'सात नदियाँ एक समुन्दर' उपन्यास ईरानी क्रान्ति पर आधारित होने से उसमें ईरानी शब्दांश आए हैं। लेखिका ने कहीं–कहीं ईरानी वाक्यांश भी दिए हैं–– "खुदाया! खुदाया! खुमैनी रा निगेहदार ता इनकलाब मेहंदी।"[3] ऐसे शब्द बहुत बार देखने को मिलते हैं जिससे ईरानी भाषा से अवगत होते हैं और उनके अर्थ को समझकर उससे आत्मसात् करते हैं।

"खुमैनी अजीजम बेगू की खून बेरिज्म।"[4] पाठकों की सुविधा के लिए लेखिका ने इन वाक्यांशों के अर्थ भी दिए हैं, जिससे आम जनता उनसे अवगत होकर समझ जाए कि वह क्या कह रही है। जब तक कोई रचना स्पष्टता की द्योतक नहीं बनती है तब तक वह निम्न श्रेणी की मानी जाती है।

1.3 अंग्रेजी भाषा :

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में पात्रानुकूल कहीं–कहीं अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है जो सर्वथा योग्य है। इससे पात्रों के चित्रण में स्वाभाविकता आई है। 'सात नदियाँ एक समुन्दर' में अंग्रेजी वाक्यांशों का प्रयोग देखिए–"यू ऑल आर केनेटिक्स नॉट लोनली खुमैनी तथा ही इज क्रुवेल, मैडम! बिग मर्डर।"[5]

'सात नदियाँ एक समुन्दर' उपन्यास में पेस्टरी, प्रोफेसर, मिनिस्ट्री, पिज्जा, मिसिज, फैट, डीटॉल, क्रीम, प्रोग्राम, लिफ्ट, एजेंट, चेकपोस्ट, लिपस्टिक, मनीक्यूर, ड्यूटी आदि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में एमरजेंसी, ऑफिस, वारंट, ब्लैकबोर्ड, एजुकेशन, फॉरेन सेक्रेटरी, मिसिज आदि अंग्रेजी शब्द दृष्टिगोचर होते हैं तो 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में टेक इट इजी, डायरैक्टर, एम्बेसडर, ड्राईंग रूम, फोन आदि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है। शाल्मली, जीरो रोड, अक्षयवट, कुईयांजान उपन्यासों में भी अंग्रेजी शब्दों को बराबर देखा जा सकता है।

1.4 शब्द प्रयोग के विविध रूप :

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में शब्दों के प्रयोग के विविध रूपों के दर्शन होते हैं। लेखिका ने नपे–तुले शब्दों द्वारा बोलचाल की भाषा में विचारों की अभिव्यक्ति की है। उनके उपन्यासों में विदेशी शब्दांतर्गत अरबी, फारसी, उर्दू, ईरानी तथा अंग्रेजी शब्द प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। यह समाज की व्यावहारिकता के कारण आ रहे हैं क्योंकि यहाँ के समाज में ऐसी भाषा ही बोलचाल की भाषा बनी हुई है तब इससे अलग नहीं हुआ जा सकता है।

1.5 विदेशी शब्द :

नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में विदेशी शब्दों का प्रयोग बड़ी सहजता से किया है। उनकी शिक्षा फारसी भाषा में होने के कारण इन शब्दों की भरमार दिखाई देती है परन्तु अरबी, फारसी और उर्दू शब्दों की ज्यादती होने के बावजूद उनके उपन्यासों की भाषा कहीं भी बोझिल नहीं हुई है। इन शब्दों के कारण उनकी भाषा में भी स्वाभाविकता आई है। अरबी, फारसी, उर्दू के अलवा उनके उपन्यासों में अंग्रेजी के साथ–साथ 'सात नदियाँ एक समन्दर' उपन्यास में ईरानी शब्द प्रचुर मात्र में मिलते हैं। इसके बावजूद कहीं भी भाषा की कठिनता नजर नहीं आ रही है। फिर उसे सरलता के साथ अच्छी तरह समझा जा रहा है।

1.6 अरबी शब्द :

'सात नदियाँ एक समुन्दर' उपन्यास में कीमत, हाकिम, हुजूर, खबर, कदम, ग़म, खत्म, खाक, कब्र, गरीब, मौत, मुजरमें, मुंजिल, माश–अल्ला, फरार, बाग, इश्क, फाल, किस्मत आदि अरबी शब्द दिखाई देते हैं। 'जिन्दा मुहावरे' उपन्यास में निजाम, हाफिज, दिमाग, कदम, यकीन, कीमत, गजल, नफरत, मरज, जायज, अल्पाज, खफा, अलकय, गायस, तारिक, जन्नत, ताजिर, फिक्र, ख्याल, लफ्ज, शख्स, जुमला, दुआ, अजना आदि अरबी शब्द प्रयुक्त हुए हैं। इन सबके बावजूद उपन्यासों में शब्दों के माध्यम से बोझिलता नहीं दखने को मिलती है।

1.7 फारसी शब्द :

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में अरबी शब्दों के साथ–साथ फारसी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। 'सात नदियाँ एक समन्दर' उपन्यास में खामोशी, बाल, नौरोज, खुदा, फैर, मादरकवहे, समन्दर, गोसे, तुखमे, आगोस, कब्रिस्तान, खैरियत आदि शब्द प्रयुक्त हुए हैं तो 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में जंग, ख्वाब, चीज, जबान, परवाह, दोजख, खफगी, सिपाही, आवाज, चीज, कामयाबी, आबाद, दुश्वार, कनीज आदि फारसी शब्द दिखाई देते हैं। उनके 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में खैर, रोज, जबरदस्ती, खुशी, खुदा, खामोश, खैरियत, आवाज, गुजर आदि फारसी शब्दों का प्रयोग हुआ है। उनके शाल्मली, जीरो रोड, कुईयांजान, अक्षयवट उपन्यासों में अरबी, फारसी शब्दों का प्रयोग बहुत कम हुआ है किन्तु फिर भी उपन्यासों में पाठक की रोचकता बनी हुई है।

1.8 उर्दू :

नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में अरबी–फारसी शब्दों के साथ–साथ उर्दू शब्दों का भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। 'सात नदियाँ एक समन्दर' उपन्यास में हुलिया, इलाका, खतरा, कागज, शिवा, गिरफ्त, इरफान, काजार, फातेह, जनाजा, खादमखाह, सिजदा, ससरीक, जनानी, नकली, दावत, इजहार, इरफान, काजार आदि उर्दू शब्द दिखाई देते हैं। इसी तरह से 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में हुक्का, फिजा, पाकीज, पाजी, दावत, काफिला, वजूद, जिन्दा, जदां, जरूरत, नहर, गुजारा, इंतजाम, सिक्का, कबीला, जनीना, फसरूक आदि उर्दू शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में दीदार, सितार, सवाब, तखलीफ, कब्जा, तजरबा, माफ, फिकरा, गजाला, पुरजा, गुजरना आदि उर्दू शब्द देखने को मिलते हैं। इससे लेखिका की उर्दू भाषा के प्रति पकड़ मजबूत दिखलाई पड़ती है।

1.9 तुर्की भाषा :

'सात नदियाँ एक समन्दर' उपन्यास में फालीन इस एक पात्र तुर्की भाषा शब्द का प्रयोग हुआ है। ऐसे शब्दों के प्रति लेखिका का गहन लगाव एवं रुझान स्पष्ट दिखलाई पड़ रहा है।

1.10 भाषा सौन्दर्य के साधन :

वस्तुतः किसी भी रचना की सार्थकता उसमें व्यक्त विचार और भावों को सहज, सुन्दर और आकर्षक ढंग से अभिव्यक्त करने में होती है। नासिरा शर्मा ने अपनी अभिव्यक्ति को सुन्दर और आकर्षक बनाने के लिए आलंकारिक भाषा, मुहावरे, कहावतें, लोकोक्तियों,

वाक्य–विन्यास, बिम्ब, प्रतीक आदि प्रमुख उपकरणों का सार्थकता के साथ प्रयोग किया है। इससे इनके उपन्यासों की रोचकता और स्पष्टता को बराबर देखा जा सकता है।

2.0 मुहावरे लोकोक्तियां और कहावतें :

इनके उपन्यासों में इसका खुलकर प्रयोग हुआ है। मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग रचनाकारों में बुद्धि और अनुभव की विशेष पहचान होती है। यह हमारे दैनिक जीवन में सहज ढंग से व्यवहृत होते हैं। इनका प्रयोग वाक्य को रोचक और प्रभावशाली बनाता है। अतः नासिरा शर्मा के उपन्यासों में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग अर्थपूर्ण और स्वाभाविकता से हुआ है जो उनके उपन्यासों में सजीवता बनाए रखते हैं।

2.1 मुहावरे :

नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में मुहावरों का प्रयोग खुलकर किया है। 'सात नदियाँ एक समुन्दर' उपन्यास में माथे पर बल पड़ना, जान निछावर करना, पाँचों उंगलियाँ घी में होना, गोलियों से छेद देना, कलेजा थामकर रहना, कमर के टाके टूटना, साँप सूंघना, मुंह पर ताला डालना आदि मुहावरे दिखाई देते हैं। इस तरह से 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में दिल केके के पत्ते की तरह चीरना, तारीफों के पुल बांधना, कटी पतंग की तरह डोलना, हमदर्दी का इजहार करना, तहलका मचाना, अरमान धरा का धरा रहना, छछूंदर के सर में चमेली का तेल लगाना आदि मुहावरे दृष्टिगोचर होते हैं। 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में मुंह की बात छीनना, जबान पर ताले पड़ना, तिल का पहाड़ बनाना, दाने–दाने को मोहताज होना, भ्रम टूटना, लहू के घूंट पीना, लकवा मारना, घोड़े बेचकर सो जाना आदि मुहावरों का प्रयोग हुआ है। ऐसे ही कुईयांजान, जीरो रोड और अक्षयवट में मुहावरों का खूब प्रयोग हुआ है जिसके परिणामस्वरूप पाठक की उपन्यास पढ़ते समय रोचकता अधिक बढ़ जाती है।

2.2 लोकोक्तियाँ व कहावतें :

लोकोक्तियाँ और कहावतों का प्रयोग भी उनके उपन्यासों में अधिक मात्रा में हुआ है। 'ठीकरे की मंगनी' से उपन्यास में हाथ कंगन को आरसी क्या, जैसे सांपनाथ वैसे नागनाथ, दूर के ढोल सुवाने, रुपया परखे बार–बार आदमी परखे एक बार, मुंह में राम बगल में छुरी, तब चिड़िया चुग गई खेत, ओखली में सिर डाला तो मूसल का डर कैसा, दिल गम से आशना न हो वह दूसरों का दर्द क्या जाने आदि लोकोक्तियों और कहावतों का प्रयोग हुआ है। यह मानव जीवन में नित्य–प्रतिदिन होने वाले व्यवहार में स्पष्ट दिखलाई पड़ते हैं।

'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में चढ़ते पानी को और ढलते सूरज को कोई नहीं रोक सकता, जंगल में मोर नाचा किसने देखा, धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का, औच्छे ने कटोरा पाया, पानी पी–पी पेट फुलाया, भोर का भूला सांझा गए मो घर लौटत हैं, आम खाय तो अंगारा हगै की जरूरत नहीं है आदि लोकोक्तियाँ और कहावतों का प्रयोग हुआ है।

2.3 लोकगीत :

लेखिका ने अपने उपन्यासों में लोकगीतों का प्रयोग भी कहीं–कहीं किया है। 'सात नदियाँ एक समुन्दर' उपन्यास में लेखिका ईरानी लोकगीत के दर्शन कराए हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि लेखिका ने दूसरे देश की लोक जीवन की अभिव्यक्ति को भी गीत के माध्यम से समझने की कोशिश की है–

"ओ शिराजी हसीना, आँखें हैं तेरी या कागजी बादाम?
बादाम का नाम मत लेना, बाजार में है बहुत महंगा।
ओ शिराजी हसीना, तेरे होंठ हैं या शहद।
शहद का नाम मत लेना, बाजार में है बहुत महंगा।"[6]

इस लोकगीत द्वारा लड़की के सौन्दर्य का वर्णन किया गया है। ऐसा लड़की के सौन्दर्य को परखने वाला पुरुष कामान्ध हो चुका है जिससे वह उसे पाने के लिए बेचैन हो उठा है।

3.0 शैली का प्रभाव :

उपन्यासकार जिस ढंग से अपने विचार और भावनाओं को अभिव्यक्ति देता है उसे शैली कहते हैं। ऐसी शैली एक ओर लेखक के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालती है तो दूसरी ओर उन पात्रों के चारित्रिक गुण–अवगुणों एवं स्वाभावगत् विशेषताओं का संकेत करती है जिनके वक्तव्यों और विचारों को उपन्यासकार अपने विवरण विश्लेषण का विषय बनाता है। इस सम्बन्ध में यह कथन देखिए–– "शैली का सम्बन्ध सिर्फ रचना से ही नहीं होता बल्कि रचनाकार से भी होता है।"[7] आधुनिक उपन्यासों की सफलता बहुत कुछ शैली पर ही निर्भर करती है। सामान्यतः शैली के वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, व्यंग्यात्मक, आत्मकथात्मक, डायरी, पत्रात्मक, संवाद, नाटकीय, काव्यात्मक, मनोविश्लेषणात्मक आँचलिक आदि प्रकार माने जाते हैं। अतः नासिरा शर्मा ने औपन्यासिक शिल्प के आकर्षण को द्विगुणित करने के लिए अनेक शैलियों का प्रयोग किया है। वस्तुतः वह किसी एक शैली से बंधकर नहीं रही है। लेखिका ने अपने उपन्यासों में प्रयुक्त हुई प्रमुख शैलियों का विवेचन इस प्रकार किया है––

3.1 वर्णनात्मक शैली :

प्रस्तुत शैली में उपन्यासकार कथावस्तु, पात्र तथा स्थितियों का वर्णन तृतीय पुरुष के रूप में करता है। "बाह्य दृश्यों और घटनाओं को इस शैली में प्रस्तुत करके यथार्थ का सम्यक् बोध भी कराया जाता है।"[8] इसमें लेखक अपने चरित्रों और उनसे जुड़ी घटनाओं का इतिवृत्तात्मक वर्णन करता है, जिसमें लेखक की कल्पना व अनुभूति भी रहती है विवेच्य उपन्यासों में वर्णनात्मक शैली का सुन्दर निर्वाह हुआ है। इससे उपन्यासों की स्थिति बहुत सुदृढ़ जान पड़ती है क्योंकि पाठक की रुचि पढ़ने में अधिक रहती है।

लेखिका ने 'शाल्मली' उपन्यास में प्रकृति चित्रण के लिए वर्णनात्मक शैली का सहारा लिया है जैसे "जाड़े की ऋतु खिली धूप में खड़े शिरीष वृक्षों की नंगी शाखाओं में सुनहरी फलियों का बादामी सुनहरा रंग नीले साफ आसमान पर एक विचित्र सौन्दर्य बिखेर रहा था। हवा के साफ फलियों का हिलना और उनके अंदर बीजों का बजना किसी एक मद्धिम संगीत की तरह सुनाई पड़ रहा था। यहाँ तक फैले सफेद बादामी सुनहरे रंग के शिरीक्ष के वृक्ष वातावरण में एक उजाला फैला रहे थे। हरियाली के बीच जैसे किसी ने पिघला सेना फैला दिया हो।"[9] ऐसी मधुर प्रकृति के चित्रण को संगीतमय बना दिया है जिसका श्रेय लेखिका की सूक्ष्म मनोवृत्ति का परिचायक है।

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में लेखिका स्कूल से समबन्धित बातें वर्णनात्मक शैली में इस प्रकार प्रस्तुत करती हैं "स्कूल की ईमारत पर जब से पुताई हुई थी, वह दूर से चमकने लगी थी। मरम्मत के बाद अच्छी खासी शक्ल निकल आई थी कमरों की। मैदान में भी अशोक के कई पेड़ लगवा दिए थे। सुलताना और किरण के आ जाने से स्कूल में खासी चहल–पहल आ गई थी। पाँच लोगों ने मिलकर दीपावली पर थोड़ा सा कार्यक्रम भी रख दिया था, जिससे बच्चों और गाँव वालों में एक सम्बन्ध से बन गया था।"[10] लेखिका ने प्राकृतिक चित्रण और स्थलों का चित्रण करते समय प्रयोग किया है। 'जिंदा मुहावरे' में भी वर्णनात्मक शैली दिखाई देती है जिसके अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं।

3.2 पूर्वदीप्ति शैली :

अतीत से जुड़ी घटनाओं का वर्णन इस शैली में किया जाता है। "पात्रों के मानसिक संघर्ष को दिखलाने के लिए कहानीकार उन्हें अतीत की स्मृतियों से जोड़ता है और वर्तमान परिवेश के प्रति व्यक्त प्रतिक्रियाओं का आकलन करता है।"[11] वस्तुतः विगत की ओर उन्मुख होना ही पूर्वदीप्ति का लक्षण है। विवेच्य उपन्यासों में यह शैली द्रष्टव्य है। 'सात नदियाँ एक समुन्दर' उपन्यास में परी अपने पति खालिद को अतीत के बारे में बताती है "आज से लगभग आठ–नौ वर्ष पहले की बात है, जब हम बी.ए. में थे। छुट्टी में शिराज गए

थे। हम सब ही सहेलियाँ थी। एक दिन उर्दू बाजार गए, फिर वहीं से कहवाखान चले गए। इसी बीच जाने कहाँ से एक फालगीरन आ गई। हम लोगों ने तफरीह में आकर उसे बुलाया। तय्यबा की डांट के बावजूद हम सब बारी–बारी से उसे हाथ दिखाती रही थी। उसने अच्छी–बुरी जाने कितनी बातें बताई थी तय्यबा उल्टे इसकी खिंचाई कर रही थी।"[12] यहाँ परी ने तय्यबा ने बारे में अपने अतीत में घटित एक प्रसंग का वर्णन किया है। उनके इस उपन्यास में पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग सुन्दर दिखलाई दे रहा है।

3.3 चित्रात्मक शैली :

चित्रात्मक शैली द्वारा लेखक विराट दृश्यों का चित्रण शब्दों के माध्यम से संक्षेप में प्रस्तुत करता है। "इस शैली में छोटे–छोटे दृश्यों के माध्यम से वातावरण और पृष्ठभूमि के साथ–साथ पात्रों की रूपाकृति एवं कार्यों का सजीव चित्र खींचा जाता है।"[13] इस शैली में प्रस्तुत किए जाने वाले दृश्यों, प्रसंगों के साथ पाठकों का तादात्म्य होता है जिससे पाठक आनन्दानुभूति प्राप्त कर रहा है। वह इन दृश्यों को हृदयंगम करता हुआ निरन्तर सुखानुभूति से अवगत हो रहा है।

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग सफलता के साथ हुआ है। 'सात नदियाँ एक समुन्दर' उपन्यास में चित्रात्मक शैली एक उदाहरण द्रष्टव्य है "सूखा पतला चेहरा। गालों की हड्डियाँ उभरी हुई थी। होंठों पर पपड़ी जमा थी। फर्श पर घुटने पेट की ओर मोड़े दोनों हाथों का तकिया बनाए दाहिनी करवट सो रहा था।"[14] लेखिका ने जेल में रह रहे हुसैन का चित्रण किया है जो हुसैन की क्रश होते जा रहे देह के दर्शन कराता है। इससे प्रतीत होता है कि वह अवसाद और कुण्ठा से पीड़ित होकर असहाय हो चुका है जो अपनी रक्षा नहीं कर पाता है। ऐसे ही शाल्मली, जीरो रोड, कुईयांजान और ठीकरे की मंगनी उपन्यासों में भी चित्रात्मक शैली का प्रयोग सुन्दर बन पड़ा है।

3.4 स्मृतिपरक शैली :

इस शैली में कथावस्तु का चयन वर्तमान से आरम्भ किया जाता है और फिर किसी पात्र की स्मृति को अतीत में लौटाकर विगत जीवन की कथा प्रस्तुत की जाती है। इस शैली का प्रयोग भी नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में खूब किया है। कुइंयाजान उपन्यास में ऐसी स्मृति शैली का चित्रण हुआ है साथ ही जीरो रोड भी स्मृति शैली के दर्शन कराता है।

लेखिका ने उपन्यासों में स्मृति परक शैली का सुन्दर प्रयोग किया है जो सुन्दर बन पड़ा है। 'सात नदियाँ एक समुन्दर' उपन्यास में स्मृतिपरक शैली का उदाहरण देखिए– "सूसन का अपना बचपन, जवानी, फिर इन्कलाब का समय, उसकी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ, शहयाद के सामने कभी शाही जश्न मनाए जाते थे। हजारों की संख्या ममें लोग इस ईमारत को देखने आते थे। जुलूस, भाषण, गोली इन सारी आवाजों से ईरान भरता गया और हैक्सी हवाई अड्डे पर जाकर रुक गई। सूसन चौंक पड़ी।"[15] सूसन और उनके पति अब्बास हवाई अड्डे की तरफ टैक्सी से जा रहे थे तब तय्यबों के मन में अपने बिताए हुए जीवन के चित्र आने लगते हैं। स्मृतिपरक शैली का प्रयोग लेखिका ने अपने 'शाल्मली', कुइंयाजान, अक्षयवट और 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यासों में भी किया है।

3.5 पत्रात्मक शैली :

ऐसी शैली भावुकता से ओतप्रोत होती है। इसलिए पत्रात्मक शैली उपन्यास की कथावस्तु को भावुक बनाती है। यह उदाहरण देखिए – "पत्रों के माध्यम से औपन्यासिक पात्रों को भावभिव्यक्ति में यह सुविधा रहती है कि वे उन बातों को भी सहज रूप से प्रकट कर देते हैं, जिन्हें प्रत्यक्ष रूप में कहने में उन्हें संकोच होता है।"[16] वस्तुतः पात्र के हृदय में होने वाली हलचल तथा पात्रों के मन की गूढ़तम बातों को सुगमता से व्यक्त करने में यह

शैली विशेष रूप से उपयोगी होती है। इससे पात्रों की मानसिक वृत्तियों की सूक्ष्मता के साथ होने वाले उतार–चढ़ाव को महसूस किया जा सकता है। यह पत्रात्मक शैली एक–दूसरे के मनोभावों को समझने में सहायक होती है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग अत्यन्त मात्रा में मिलता है। 'सात नदियाँ एक समुन्दर' उपन्यास में पत्रात्मक शैली दृष्टिगोचर होती हैं। परी अपनी सखी महनाज को पत्र लिखती है "महनाज जान! छुट्टियों में हम लोग नहीं निकल पायेंगे। अच्छा है! फिर खब डालूंगी। जवाब जल्द देना। सुलेमान को सलाम बच्चों को प्यार। तुम्हारी परी।"[17] ऐसी पत्रात्मक शैली से दोनों सहेलियों के बीच जो एक आत्मीय सम्बन्धों में मिठास झलक रही है वह अन्यत्र उपन्यासों में देखने को नहीं मिल पायेगी। ऐसी शैली से एक–दूसरे कीयाद की ताजगी बराबर बनी रहती है और निकटता का आभास बराबर बना हुआ है।

आलोच्य उपन्यासों में विविध शैलियों का प्रयोग करके नासिरा शर्मा ने उपन्यासों को शैली की दृष्टि से सरस बनाया है। अतः औपन्यासिक शिल्प के आकर्षण को द्विगुणित कराने के लिए इन शैलियों का प्रयोग बहुत सफल रहा है तथा साथ ही साथ उपन्यासों की गुणवत्ता भी बढ़ी है। वस्तुतः अधिकांश रूप से उपन्यासों में मुख्यतः यही दिखलाया जाता है कि उपन्यासों में व्यक्त पात्रों के विचार, भाव और पारस्परिक सम्बन्ध कैसे हैं, वह किन कारणों अथवा मनो–प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर कार्य करते हैं। वह अपने प्रयत्नों में किस प्रकार सफल अथवा विफल होते हैं। इन सबके परिणामस्वरूप उनमें कैसे मनोविकार आदि उत्पन्न होते हैं। इसलिए कहा जा सकता है उपन्यास का लेखक के जीवन के किसी एक या अनेक अंगों के साथ बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध होता है जिसे किसी रूप में यह प्रकट करना उसका कर्त्तव्य हो जाता है। वास्तव में देखा जाए तो कुछ विशेष सिद्धान्तों अथवा विचारों के प्रतिपादन के उद्देश्य से तो बहुत ही कम उपन्यास लिखे जाते हैं, परन्तु सभी उपन्यासों में कुछ न कुछ विशेष विचार अथवा सिद्धान्त अपने आप आ जाते हैं। इसलिए उपन्यास में उद्देश्य पूर्ति के लिए प्रत्यक्ष विधि तथा अप्रत्यक्ष विधि इन दो विधियों का लेखक आश्रय लेता है तभी कहीं जाकर उपन्यासकार अपने उद्देश्य में सफल होता है।

4.0 संदर्भ सूची

1. शांतिस्वरूप गुप्त, उपन्यास स्वरूप संरचना तथा शिल्प, पृ. 169
2. नासिरा शर्मा, जिंदा मुहावरे, पृ. 10
3. नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, पृ. 333
4. नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, पृ. 334
5. नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, पृ. 306
6. नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, पृ. 47
7. डॉ. पांडुरंग पाटिल, उपन्यासकार देवेश ठाकुर, पृ. 204
8. सतीश पांडेय, कथा शिल्प देवेश ठाकुर, पृ. 113
9. नासिरा शर्मा, शाल्मली, पृ. 37
10. नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी, पृ. 64
11. डॉ. इन्दू रश्मि, नई कहानी का स्वरूप विवेचन, पृ. 169
12. नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, पृ. 161
13. डॉ. सतीश पांडेय, कथा शिल्प देवेश ठाकुर, पृ. 237
14. नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, पृ. 321
15. नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, पृ. 320
16. डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र, अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, पृ. 237
17. नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, पृ. 325